दुधारू भैंसों की आहार व्यवस्था
कृषि कुंभ (जुन, 2022), खण्ड 02 भाग 01, पृष्ठ संख्या 30–32

दुधारू भैंसों की आहार व्यवस्था

सतेंद्र कुमार[1], पी.के. उपाध्याय[2], रामजी गुप्ता[3]

शोध छात्र[1], प्रोफेसर[2,3]
विभाग पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान
चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर 20802

E.mail : satendrakumar19951@gmail.com

दुधारू भैंसों की आहार व्यवस्था उनके दुग्ध उत्पादन के अनुसार करनी चाहिए प्रतिदिन 5 किलोग्राम तक दूध देने वाली भैंसों को दलहनी वा अदलहनी हरे चारे मिलाकर भरपेट खिलाने पर अलग से दाना देने की जरूरत नहीं होती है 5 किलोग्राम से अधिक दूध देने वाली भैंसों को अतिरिक्त रूप से एक किलोग्राम दाना 2 लीटर दूध उत्पादन पर देना पड़ता है अतः 7 लीटर दूध देने वाली भैंसों को भरपेट चारा मिश्रण के साथ ही साथ एक किलोग्राम दाना एवं 9 किलोग्राम दूध देने वाली भैंसों को 2 किलोग्राम दाना अतिरिक्त देना चाहिए 10 किलोग्राम एवं 10 किलोग्राम से अधिक दूध देने वाली भैंसों को पोषक तत्वों की आपूर्ति दलहनी चारा पर्याप्त मात्रा में देते हुए दाना मिश्रण देखकर पूर्ण की जा सकती है किंतु दलहनी हरा चारा कम मात्रा में होने पर केवल साथ में दाना मिश्रण देखकर पोषक तत्व आपूर्ति नहीं किए जा सकते 10 लीटर से अधिक दूध उत्पादन वाली भैंसों की अवस्था तालिका अनुसार करनी चाहिए।

दुग्ध उत्पादन	रबी	खरीफ	चारा सीमित होने पर
5 से 7 किलोग्राम	दलहनी चारे 35 से 40 किलोग्राम अदलहनी चारे 15 से 20 किलोग्राम भूसा/कड़वी 3 किलोग्राम	ज्वार/बाजरा/मक्का चारा 40 से 50 किलोग्राम सांद्र आहार 2 किलोग्राम	हरा चारा. 20 किलोग्राम भूसा/कड़वी.5 किलोग्राम सांद्र आहार 4 किलोग्राम
8 से 10 किलोग्राम	दलहनी चारे 35 से 40 किलोग्राम अदलहनी चारे 15 से 20 किलोग्राम भूसा/कड़वी 4 किलोग्राम सांद्र आहार 2. 2–5 किलोग्राम	ज्वार/बाजरा/मक्का चारा 40 से 50 किलोग्राम सांद्र आहार 4 किलोग्राम	हरा चारा 20 किलोग्राम भूसा/कड़वी.5 किलोग्राम सांद्र आहार 6 किलोग्राम
10 से 12 किलोग्राम	दलहनी चारे 35 से 40 किलोग्राम अदलहनी चारे 15 से 20 किलोग्राम भूसा / कड़वी	ज्वार/बाजरा/मक्का चारा 40 से 50 किलोग्राम सांद्र आहार 4 किलोग्राम बिनोला / चने 2 किलोग्राम	हरा चारा. 20 किलोग्राम भूसा/कड़वी 05 किलोग्राम सांद्र आहार 6 किलोग्राम बिनोला/चने 2 किलोग्राम

	3 किलोग्राम सांद्र आहार 3 किलोग्राम		
12 से 14 किलोग्राम	दलहनी चारे 30 से 35 किलोग्राम अदलहनी चारे 20 किलोग्राम भूसा/कड़वी 3 किलोग्राम सांद्र आहार 4 किलोग्राम	ज्वार/बाजरा/मक्का चारा 50 किलोग्राम सांद्र आहार 5 किलोग्राम	हरा चारा 20 किलोग्राम भूसा/कड़वी 5 किलोग्राम सांद्र आहार 6 किलोग्राम बिनोला/ चने 2 किलोग्राम
14 से 16 किलोग्राम	दलहनी चारे 35 से 40 किलोग्राम अदलहनी चारे 15 से 20 किलोग्राम भूसा / कड़वी 2 किलोग्राम सांद्र आहार 5 किलोग्राम	ज्वार/बाजरा/मक्का चारा 40 से 50 किलोग्राम सांद्र आहार 4 किलोग्राम बिनोला/चने 2 किलोग्राम	हरा चारा 20 किलोग्राम भूसा/कड़वी.5 किलोग्राम सांद्र आहार 5 किलोग्राम बिनोला/चने 2 किलोग्राम

भैंसों सांद्र आहार के नमूने 1

आहार घटक	मात्रा
मक्का / बाजरा	40%
गेहूं का चोकर	17%
सरसों की खल	20%
बिनोले की खल	20%
खनिज लवण मिश्रण	02%
नमक	01%

भैंसों सांद्र आहार के नमूने 2

आहार घटक	मात्रा
मक्का / बाजरा	30%
गेहूं का चोकर	20%
तिल की खल	15%
सरसों की खल	15%
बिनोले की खल	17%
खनिज लवण मिश्रण	02%

नोटः

1. आहार घटकों की स्थानीय रूप से उपलब्धता एवं कीमत अनुसार चयन करके स्वयं आहार तैयार कराना करना पशुपालक के लिए लाभकारी होगा।
2. उच्च दुग्ध उत्पादन भैंसों के लिए सांद्र आहार बनाने में तेल युक्त राइस पोलिश एवं घनी द्वारा बनाई गई खेलों का प्रयोग करना चाहिए।

उपरोक्त नमूनों के तैयार किए गए आहार की गुणवत्ता उत्तम प्राप्त होगी जिससे भैंसों से अधिकतम दूध उत्पादन प्राप्त होगा अतः यह पशुपालक के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी होगा खनिज तत्व पशु आहार के अत्यंत आवश्यक महत्वपूर्ण पोषक तत्व है जिस प्रकार मकान बनाने के लिए ईट पत्थर रेट श्रीमैंट एवं लोहे की छड़ आदि की आवश्यकता होती है उसी प्रकार शरीर की संरचना एवं विभिन्न कार्यों को संचालित व नियमित करने के लिए विभिन्न खनिजों तत्वों की आवश्यकता होती है पशु आहार के विभिन्न पोषक तत्वों में से खनिज तत्व ऐसे पोषक तत्व हैं जिनका शरीर में निर्माण नहीं होता है अतः खनिज तत्वों का पशु आहार में विशेष स्थान है इसकी कमी या अधिकता दोनों पशु के लिए हानिकारक है लेकिन बहुत कम पशुपालक खनिज तत्वों के महत्त्व को समझते हैं परिणाम स्वरूप ऐसे पशुपालक आहार पर ध्यान देने के बावजूद

आहार में खनिज तत्वों के अभाव के कारण पशुओं से पर्याप्त दूध उत्पादन नहीं कर पाते

खनिज तत्वों के कार्य

1. खनिज तत्व शरीर के रासायनिक संगठन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं
2. विभिन्न ऊतकों के संगठन के रूप में कार्य करते हैं
3. खनिज तत्व अस्थियों की बनावट, पाचन क्रिया, शारीरिक प्रक्रियाओं और मांसपेशियों की क्रियाशीलता के लिए आवश्यक है
4. यह शरीर की विभिन्न उपापचय क्रिया में उत्प्रेरक का कार्य करती हैं
5. लाल रक्त कणिकाओं में उपस्थित हीमोग्लोबिन मैं खनिज तत्व लोहा होता है हीमोग्लोबिन ऑक्सीजन वाहक का कार्य करता है।

खनिज तत्वों का वर्गीकरण

खनिज तत्वों को शरीर में आवश्यकता के अनुसार दो भागों में विभाजित किया गया है

बृहद तत्व :–वह खनिज तत्व है जो शरीर में अधिक मात्रा में आवश्यक होते हैं जैसे कैल्शियम फास्फोरस सोडियम क्लोरीन पोटेशियम और सल्फर

विरल तत्व :– वह खनिज तत्व है जिनकी शरीर में बहुत कम मात्रा के उचित रखरखाव हेतु आवश्यकता होती है जैसे लोहा तांबा कोबाल्ट क्लोरीन क्रोमियम सेलेनियम

पशु को आहार में हरा चारा खिलावेः–

पशुपालन व्यवसाय में पशु को अधिकतम उत्पादन प्राप्त हेतु संतुलित आहार का विशेष महत्व है आहार का लगभग 70% खर्च होता है अतः इसे कम करके अधिकतम लाभ अर्जित किया जा सकता है यह प्रश्न उठता है कि ऐसा कौन सा आहार हो जिसने कम खर्च पर अधिक से अधिक पोषक तत्व प्राप्त हो सके इस प्रकार पशु का आहार हरा चारा ही हो सकता है विशेषकर दलहनी हरा चारा जो पशुओं की जरूरत के अनुसार साथ –साथ कुछ हद तक उत्पादकता भी पोषक तत्वों की आपूर्ति कर देता है अतः अल्प खर्च पर पशुओं की उत्पादकता बनाए रखने में हरे चारे को पौष्टिकता में उत्तम माना जाता है एवं इसे खिलाने से दाने की बचत होती है

पशु आहार में हरे चारे का महत्वः–

1. हरा चारा मुलायम और स्वादिष्ट होता है
2. विभिन्न पोषक तत्वों की आपूर्ति करके पशु को स्वास्थ्य एवं उत्पादक सील बनाए रखती हैं
3. हरे चारे से पशु को दाने की तुलना में कम खर्च पर पोषक तत्व प्राप्त होते हैं
4. हरा चारा विशेषकर दलहनी हरे चारे में प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस आदि पर्याप्त मात्रा में होते हैं
5. हरे चारे में विटामिन ए की प्रचुर मात्रा होती है जो पशु को स्वास्थ्य बनाए रखने और संक्रामक रोगों से बचाव में महत्वपूर्ण है विटामिन ए की कमी पशुओं में बांझपन एवं गर्भपात होने का एक मुख्य कारण है
6. हरे चारे में नमी की मात्रा अधिक होने से शरीर की कई क्रियाएं सुचारू रूप से चलती रहती है उन्नत हरे चारे की किस्में बार–बार काट कर हरा चारा पशु को दिया जाता है जिससे एक बार बुवाई किए गए चारे से काफी समय तक हरा चारा मिलता है
7. हरे चारे की अधिकतम पोस्टिक गुणवत्ता बनाए रखने हेतु इन्हें साइलेज या है के रूप में संरक्षित करके वर्षभर उपयोग में लिया जा सकता है।